



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	11-10-2024	02	1-4

The Tribune

Beekeeping integral to agri production, job generation, says Hisar varsity VC

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, OCTOBER 10

A seven-day special training programme on beekeeping started at the department of entomology of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU), Hisar, on Thursday.

The programme was sponsored by National Beekeeping and Honey Mission (NBHM) and National Bee Board (NBB).

Vice-Chancellor Prof BR Kamboj was present as the chief guest at the programme. As many as 28 officials and jawans of the Indo-Tibetan Border Police (ITBP) and Central Reserve Police Force (CRPF) were participating in the training event.

The Vice-Chancellor said beekeeping was developing as an important business in the agriculture sector. "Along with increasing agricultural production, beekeeping is also playing an important role in employment generation," he said.

He added that small and marginal farmers, landless and unemployed youth could adopt beekeeping as an alternative business.

He said Haryana was a leading state in the field of beekeeping. "India is one of the major honey exporting countries in the world. More than 50 per cent of the honey produced in our country is being exported to other countries.



HAU Vice-Chancellor BR Kamboj addresses participants during the training session in Hisar.

After the White Revolution, Green Revolution and Blue Revolution, the country now needs a 'sweet revolution', he said.

Kamboj said bees played an important role in increasing grain production. "But indiscriminate use of pesticides harms bees. Therefore, farmers should use pesticides in limited quantities," he said.

The Vice-Chancellor said biodiversity could be promoted further through beekeeping.

HAU and various institutions were providing research work on bees, simple and short-term training on beekeeping, its promotion and propagation through various media and loan facilities/government financial assistance, he said.

He added that the Ministry of Agriculture and Farmers had now given the status of beekeeping as the fifth investment in agriculture after investing in seeds, fertilisers, irrigation and pesticides as the first four agricultural inputs.

Director, Research Dr Rajbir Garg said information related to beekeeping would be given by experienced scientists during the training session.

He said through the training, the participants would also be told how income could be increased by link-

ing beekeeping with self-employment.

Dean of Agriculture College Dr SK Pahuja said all information was being provided by the university to make the farmers aware about fisheries, beekeeping and mushroom cultivation so that they could increase their income.

He said the university was soon going to start a three-month certificate course for soldiers in which information would be given about agriculture and all the businesses related to agriculture.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	11-10-2024	03	1-4

• हकृवि में मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण में आईटीबीपी व सीआरपीएफ के अधिकारी सीख रहे गुर

मधुमक्खी पालन की कृषि उत्पादन के साथ रोजगार सृजन में अहम भूमिका: प्रो. काम्बोज

भास्करन्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कोट विज्ञान विभाग में मधुमक्खी पालन पर 7 दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (एनबीएचएम) व राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (एनबीबी) द्वारा प्रायोजित परियोजना के तहत इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रहे। इस प्रशिक्षण में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) व केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के 28 अधिकारी एवं जवान भाग ले रहे हैं। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि मधुमक्खी



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रशिक्षण कार्यक्रम में संबोधित करते हुए।

पालन कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है। मधुमक्खी पालन कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ रोजगार सृजन में भी अहम भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि छोटे व सीमांत किसान, भूमिहीन और बेरोजगार युवक मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के

तौर पर अपना सकते हैं।

हरियाणा मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में अग्रणी प्रदेश है। भारत दुनिया के प्रमुख शहद निर्यातक देशों में से एक है। हमारे देश में शहद उत्पादन का 50 प्रतिशत से अधिक अन्य देशों में निर्यात किया जा रहा है। देश को श्वेत क्रांति, हरित क्रांति और नीली क्रांति के

बाद अब 'मीठी क्रांति' की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मधुमक्खी अनाज उत्पादन की बढ़ती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग करने से मधुमक्खियों को नुकसान होता है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने कहा कि किसानों को मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन तथा मशरूम की खेती के बारे में जागरूक किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय जल्द ही सैनिकों के लिए तीन महीने का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू करने जा रहा है जिसमें कृषि व कृषि से संबंधित सभी व्यवसायों के बारे में जानकारी दी जाएगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमृत उजाला	11-10-2024	03	1-4

आयोजन

एचएयू में आईटीबीपी व सीआरपीएफ के लिए मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ

रोजगार सृजन में मधुमक्खी पालन की भूमिका अहम

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग में मधुमक्खी पालन पर 7 दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (एनबीएचएम) व राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (एनबीबी) द्वारा प्रायोजित परियोजना के तहत इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। कुलपति ने कहा कि मधुमक्खी पालन कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है। मधुमक्खी पालन कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ रोजगार सृजन में भी अहम भूमिका निभा रहा है। प्रशिक्षण में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) व केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के 28 अधिकारी एवं जवान भाग ले रहे हैं।

कुलपति ने बताया कि जल्द ही



हिसार।एचएयू में प्रो. बीआर कांबोज प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए। स्रोत: संस्थान

विश्वविद्यालय सैनिकों के लिए तीन महीने का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू करने जा रहा है जिसमें कृषि व कृषि से संबंधित सभी व्यवसायों के बारे में जानकारी दी जाएगी। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने

कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान अनुभवी वैज्ञानिकों द्वारा मधुमक्खी पालन से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी दी जाएगी। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने कहा कि किसानों को

मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन व मशरूम की खेती के बारे में जागरूक किया जा रहा है। इस मौके पर कीट विज्ञान की अध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव, डॉ. मनोज कुमार, डॉ. भूपेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत ख़ाबार्	11.10.2024	05	4-8

मधुमक्खी पालन की कृषि उत्पादन के साथ-साथ रोज़गार सृजन में अहम भूमिका : प्रो. काम्बोज

हिसार, 10 अक्टूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग में मधुमक्खी पालन पर 7 दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (एनबीएचएम) व राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (एनबीबी) द्वारा प्रायोजित परियोजना के तहत इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रहे। इस प्रशिक्षण में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) व केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के 28 अधिकारी एवं जवान भाग ले रहे हैं। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि मधुमक्खी पालन कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है।

मधुमक्खी पालन कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ रोजगार सृजन में भी अहम भूमिका निभा रहा है। छोटे व सीमांत किसान, भूमिहीन और बेरोजगार युवक मधुमक्खी



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रशिक्षण कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए। पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। हरियाणा मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में अग्रणी प्रदेश है। भारत

मधुमक्खी अनाज उत्पादन की बढ़ोतरी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग करने से

हकृति में आईटीबीपी व सीआरपीएफ के लिए मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आरम्भ

दुनिया के प्रमुख शहद निर्यातक देशों में से एक है। हमारे देश में शहद उत्पादन का 50 प्रतिशत से अधिक अन्य देशों में निर्यात किया जा रहा है। देश को श्वेत क्रांति, हरित क्रांति और नीली क्रांति के बाद अब 'मीठी क्रांति' की आवश्यकता है।

मधुमक्खियों को नुकसान होता है। इसलिए किसान कीटनाशकों का प्रयोग सीमित मात्रा में करें। कुलपति ने कहा कि हमारा देश अपनी विशेष भौगोलिक स्थिति के कारण जैव विविधता से समृद्ध है। विश्व में सबसे अधिक जैव विविधता हमारे

देश में पाई जाती है। मधुमक्खी पालन के माध्यम से जैव विविधता को और अधिक बढ़ावा दिया जा सकता है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा मधुमक्खी पर शोध कार्य, मधुमक्खी का सरल एवं कम अवधि का प्रशिक्षण, विभिन्न प्रसार माध्यमों द्वारा इसका प्रचार व प्रसार एवं ऋण सुविधाएं/सरकारी आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है।

उन्होंने बताया कि कृषि एवं किसान मंत्रालय ने पहले चार कृषि इनपुट के रूप में बीज, खाद, सिंचाई व कीटनाशक को निवेश के बाद अब मधुमक्खी पालन को कृषि के पांचवे निवेश के रूप में दर्जा दिया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान अनुभवी वैज्ञानिकों द्वारा मधुमक्खी पालन से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण के माध्यम से प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन को स्वरोजगार से जोड़कर आमदनी

को कैसे बढ़ाया जा सकता है, इसके बारे में भी बताया जाएगा। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने कहा कि किसानों को मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन तथा मशरूम की खेती के बारे में जागरूक करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा तमाम जानकारी उपलब्ध करवाई जा रही है ताकि किसान अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकें। विश्वविद्यालय जल्द ही सैनिकों के लिए तीन महीने का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू करने जा रहा है जिसमें कृषि व कृषि से संबंधित सभी व्यवसायों के बारे में जानकारी दी जाएगी। कीट विज्ञान की अध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने सभी का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी दी। धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. मनोज कुमार ने पारित किया। मंच का संचालन डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने किया। इस अवसर पर सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष, शिक्षक, गैर शिक्षक कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिंदूस्तान	11-10-2024	07	1-2

मधुमक्खी पालन की रोजगार सृजन में अहम भूमिका : काम्बोज

हिसार, 10 अक्टूबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग में मधुमक्खी पालन पर 7 दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (एनबीएचएम) व राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (एनबीबी) द्वारा प्रायोजित परियोजना के तहत इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रहे। इस प्रशिक्षण में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) व केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के 28 अधिकारी एवं जवान भाग ले रहे हैं। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि मधुमक्खी पालन कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है।

मधुमक्खी पालन कृषि उत्पादन

बढ़ाने के साथ-साथ रोजगार सृजन में भी अहम भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि छोटे व सीमांत किसान, भूमिहीन और बेरोजगार युवक मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। हरियाणा मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में अग्रणी प्रदेश है। भारत दुनिया के प्रमुख शहद निर्यातक देशों में से एक है। हमारे देश में शहद उत्पादन का 50 प्रतिशत से अधिक अन्य देशों में निर्यात किया जा रहा है। देश को श्वेत क्रांति, हरित क्रांति और नीली क्रांति के बाद अब 'मीठी क्रांति' की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मधुमक्खी अनाज उत्पादन की बढ़ती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग करने से मधुमक्खियों को नुकसान होता है। इसलिए किसान कीटनाशकों का प्रयोग सीमित मात्रा में करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	11-10-2024	02	04

**मधुमक्खी पालन की
रोजगार सृजन में अहम
भूमिका : काम्बोज**

जास • हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग में मधुमक्खी पालन पर सात दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन व राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड द्वारा प्रायोजित परियोजना के तहत इस कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रहे। कुलपति ने कहा कि मधुमक्खी पालन कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है। मधुमक्खी पालन कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ रोजगार सृजन में भी अहम भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि छोटे व सीमांत किसान, भूमिहीन और बेरोजगार युवक मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	10.10.2024	---	--

मधुमक्खी पालन की कृषि उत्पादन के साथ रोजगार सृजन में अहम भूमिका : प्रो. काम्बोज

हकृति में आईटीबीपी व सीआरपीएफ के लिए मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग में मधुमक्खी पालन पर 7 दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (एनबीएचएम) व राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (एनबीबी) द्वारा प्रायोजित परियोजना के तहत इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज बतौर मुख्यातिथि उपस्थित रहे। इस प्रशिक्षण में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) व केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के 28 अधिकारी एवं जवान भाग ले रहे हैं।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि मधुमक्खी पालन कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है। मधुमक्खी पालन कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ रोजगार सृजन में भी अहम भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि छोटे व सीमांत किसान, भूमिहीन और



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए।

बेरोजगार युवक मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। हरियाणा मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में अग्रणी प्रदेश है। भारत दुनिया के प्रमुख शहद निर्यातक देशों में से एक है। हमारे देश में शहद उत्पादन का 50 प्रतिशत से अधिक अन्य देशों में निर्यात किया जा रहा है। देश को श्वेत क्रांति, हरित क्रांति और नीली क्रांति के बाद अब 'मीठी क्रांति' की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मधुमक्खी अनाज उत्पादन की बढ़ती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन

कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग करने से मधुमक्खियों को नुकसान होता है। इसलिए किसान कीटनाशकों का प्रयोग सीमित मात्रा में करें।

कुलपति ने कहा कि हमारा देश अपनी विशेष भौगोलिक स्थिति के कारण जैव विविधता से समृद्ध है। विश्व में सबसे अधिक जैव विविधता हमारे देश में पाई जाती है। उन्होंने कहा कि मधुमक्खी पालन के माध्यम से जैव विविधता को और अधिक बढ़ावा दिया जा सकता है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं विभिन्न संस्थाओं

प्रशिक्षण में अनुभवी वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन से संबंधित देंगे जानकारी

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान अनुभवी वैज्ञानिकों द्वारा मधुमक्खी पालन से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण के माध्यम से प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन को स्वरोजगार से जोड़कर आमदनी को कैसे बढ़ाया जा सकता है, इसके बारे में भी बताया जाएगा। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. उसके पाहुणा ने कहा कि किसानों को मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन तथा मशरूम की खेती के बारे में जागरूक करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा जानकारी उपलब्ध करवाई जा रही है ताकि किसान

द्वारा मधुमक्खी पर शोध कार्य, मधुमक्खी का सरल एवं कम अवधि का प्रशिक्षण, विभिन्न प्रसार माध्यमों द्वारा इसका प्रचार व प्रसार एवं ऋषि सुविधाएं/सरकारी आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है। उन्होंने

अपनी आय में बढ़ोतरी कर सके। विश्वविद्यालय जल्द ही सैलिकों के लिए तीन महीने का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू करने का रस है जिसमें कृषि व कृषि से संबंधित सभी व्यवसायों के बारे में जानकारी दी जाएगी। कीट विज्ञान की अध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने सभी का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. मनोज कुमार ने पारित किया। मंच का संचालन डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने किया। इस अवसर पर सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, विभागाध्यक्ष, शिक्षक, गैर शिक्षक कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

बताया कि कृषि एवं किसान मंत्रालय ने पहले चार कृषि इनपुट के रूप में बीज, खाद, सिंचाई व कीटनाशक को निवेश के बाद अब मधुमक्खी पालन को कृषि के पांचवें निवेश के रूप में दर्जा दिया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि किरण न्यूज	10.10.2024	---	--



Hari Kiran News

16h

रोजगार सृजन में कृषि उत्पादन के साथ-साथ मधुमक्खी पालन की अहम भूमिका : प्रो. बीआर कम्बोज
-एचएयू में आईटीबीपी व सीआरपीएफ के लिए मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ-

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा है कि मधुमक्खी पालन कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में विकसित हो रहा है। मधुमक्खी पालन कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ रोजगार सृजन में भी अहम भूमिका निभा रहा है।

कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज गुरुवार को विश्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग में मधुमक्खी पालन पर शुरू हुए सात दिवसीय विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (एनबीएचएम) व राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (एनबीबी) द्वारा प्रायोजित परियोजना के तहत इस कार्यक्रम में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) व केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के 28 अधिकारी एवं जवान भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि छोटे व सीमांत किसान, भूमिहीन और बेरोजगार युवक मधुमक्खी पालन को एक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर पर अपना सकते हैं। हरियाणा मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में अग्रणी प्रदेश है। भारत दुनिया के प्रमुख शहद निर्यातक देशों में से एक है। हमारे देश में शहद उत्पादन का 50 प्रतिशत से अधिक अन्य देशों में निर्यात किया जा रहा है। देश को श्वेत क्रांति, हरित क्रांति और नीली क्रांति के बाद अब 'मीठी क्रांति' की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि मधुमक्खी अनाज उत्पादन की बढ़ती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग करने से मधुमक्खियों को नुकसान होता है। इसलिए किसान कीटनाशकों का प्रयोग सीमित मात्रा में करें।

कुलपति ने कहा कि हमारा देश अपनी विशेष भौगोलिक स्थिति के कारण जैव विविधता से समृद्ध है। विश्व में सबसे अधिक जैव विविधता हमारे देश में पाई जाती है। उन्होंने कहा कि मधुमक्खी पालन के माध्यम से जैव विविधता को और अधिक बढ़ावा दिया जा सकता है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा मधुमक्खी पर शोध कार्य, मधुमक्खी का सरल एवं कम अवधि का प्रशिक्षण, विभिन्न प्रसार माध्यमों द्वारा इसका प्रचार व प्रसार एवं ऋण सुविधाएं/सरकारी आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाई जा रही है। उन्होंने बताया कि कृषि एवं किसान मंत्रालय ने पहले चार कृषि इनपुट के रूप में बीज, खाद, सिंचाई व कीटनाशक को निवेश के बाद अब मधुमक्खी पालन को कृषि के पांचवें निवेश के रूप में दर्जा दिया है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि इस प्रशिक्षण के दौरान अनुभवी वैज्ञानिकों द्वारा मधुमक्खी पालन से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण के माध्यम से प्रतिभागियों को मधुमक्खी पालन को स्वरोजगार से जोड़कर आमदनी को कैसे बढ़ाया जा सकता है, इसके बारे में भी बताया जाएगा। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने कहा कि किसानों को मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन तथा मशरूम की खेती के बारे में जागरूक करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा तमाम जानकारी उपलब्ध करवाई जा रही है ताकि किसान अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकें। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय जल्द ही सैनिकों के लिए तीन महीने का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू करने जा रहा है जिसमें कृषि व कृषि से संबंधित सभी व्यवसायों के बारे में जानकारी दी जाएगी।

कीट विज्ञान की अध्यक्ष डॉ. सुनीता यादव ने सभी का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी दी।